Sanvahak, Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026 : PP-102-106

Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Refereed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026

Page No.- 102-106

©2026 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

भारती मीणा

जवाहर लाल नेहरू टी टी कॉलेज
कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान

Corresponding Author :

भारती मीणा

जवाहर लाल नेहरू टी टी कॉलेज
कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान

लोकगीतों का वर्तमान परिपेक्ष में शैक्षिक महत्व

भूमिका : भारतीय सामाजिक व्यवस्था में लोक संस्कृति का महत्व अत्यंत व्यापक एवं महत्वपूर्ण रहा है।लोक गीत लोक कथाएं परंपराएं पर वृद्धि वालों के द्वारा सामाजिक मूल्यों की विचारधाराएं तथा मूल परंपरा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करते हैं। विशेष रूप से जनसाधारण के जीवन की सांस्कृतिक चेतना विश्वास संघर्ष संवेदनशीलता का जीवंत प्रमाण है। यदि हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा सांस्कृतिक मूल्यों के साथ मातृभाषा में अरुचि आदि की चर्चा करते हैं तब लोकगीतों की पुनर्व्याख्या और पुनः जीवन में सामान्य प्रयोग करना नितांत आवश्यक हो जाता है।

लोकगीतों का स्वरूप एवं प्रकार लो कितनों की परंपरा का स्वरूप है जिससे सामाजिक व सांस्कृतिक सामूहिक स्मृति को संवर्धन एवं संरक्षण मिलता है लोकहित सामान्यतः अन्य विशेष अवसरों ऋतुओं रिति रिवाज जातीय पहचान और सामान्य जीवन से जुड़े हुए होते हैं।इनमें लोक कहावतों और क्षेत्रीय बोली यों का विशेष प्रभाव होता है उदाहरण के तौर पर हाड़ौती अंचल में बेल गीत, फाग सांवरा गीत आदि क्षेत्रीय जनसामान्य के जीवन से मिलने वाले महत्वपूर्ण अभिलेख है।

1.प्रमुख विशेषताएं:

- सामूहिक एकता तथा सहभागिता की भावना
- क्षेत्रीय भाषाओं बोलियाँ में साहित्य निर्माण
- मौखिक रचनात्मकता
- सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश का प्रतिबिंब
- लयबद्धता तथा छंदबद्धता

2.शैक्षणिक प्रासंगिकता के विविध पहलू

क.नैतिक एवं सांस्कृतिक चारित्रिक शिक्षा

लोकगीतों में सामाजिक स्थानीय भाषा और बोलियों में रचे गए आदर्शों की बात होती है जिससे विद्यार्थियों को समझ और अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने में सहायता प्राप्त होती है जो उनके चरित्र निर्माण

में सहायक होता है जैसे सच बोलने के लिए प्रेरित करना, स्त्री की मर्यादा बताना परिवार के प्रति जिम्मेदारियों का भान करवाना जिससे कि बच्चों में अच्छे नागरिक बनने की भावना विकसित होती है तथा क्षेत्रीय परंपरा त्योहार लोक विश्वास रीती रिवाजों को वहाँ की संस्कृति की समझ और अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने में सहायता प्राप्त होती है जिससे मूल्यों का संरक्षण कर पाना सरल हो जाता है।

ख.भाषाई विकास एवं मातृभाषा की समझ:

सामान्यतया लोक गीत किसी भी क्षेत्र मैं बोली जाने वाली वहाँ की लोकभाषा में ही रचे गए होते हैं जिससे वहाँ की क्षेत्रीय भाषा को समझना और परंपराओं को तथा रीती रिवाजों को समझना सरल हो पाता है। जिससे छात्रों में भाषा को समझने के लिए रुचि हो ना और भाषा की विविधता का तथा बोले जाने वाली भाषा के सम्मान और संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का अहसास होता है।

ग.ऐतिहासिक और सामाजिक अध्ययन का स्रोत

लोकगीतों में ऐतिहासिक घटनाओं तथा वहाँ क्षेत्र संबंधी वीर तथा महापुरुषों का वर्णन अक्सर देखने को मिलता है,उदाहरणस्वरूप कोटा बुंदी में कोटिया भील ,राव मुकुंद सिंह हाड़ा आदि की जानकारी ,वहीं मेवाड़ की मीरा के पदों से उस समय के भक्ति अथवा स्त्री संघर्षों का वर्णन मिलता तथा कई ऐतिहासिक घटनाओं का संदर्भ मिलता है,जिससे छात्रों को इतिहास की जानकारी होती है और अधिक जानने की रुचि जागृत होती है।

घ.पर्यावरणीय चेतना तथा कृषिपरक शिक्षा

लोकगीतों के माध्यम से छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता सिखाई जा सकती है क्योंकि लोक गीतों में हर ऋतु और उसमें होने वाली फसल का महत्त्व बताने के साथ साथ प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता काशी चक्र जल संरक्षण आदि का विवरण होता है जिससे छात्रों में पर्यावरण संवेदनशीलता का विकास होता है।

ड. क्षेत्रीय कलाओं का संवर्द्धन

लोकगीतों के माध्यम से छात्रों में संगीत व क्षेत्र संबंधी विभिन्न प्रकार की ललित कलाओं की रुचि व अध्ययन की ललक का विकास होना संभव है ।लोकगीत नृत्य गायन घूमर संगीत शैली, नाट्यकला, ख़्याळ आदि से संबंधित जानकारी एकत्रित कर रचनात्मकता विकसित कर सकते हैं।यदि लोकगीतों को उनके पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सके तो यह उनके तथा सामाजिक संस्कृति को संरक्षित करने में सक्षम हो सकता है।

3.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकगीतों की स्थिति

वर्तमान समय में मोबाइल टी वी इंटरनेट उपकरणों द्वारा संगीत का प्रभाव बड़ा है तथा तकनीकी माध्यम से संगीत में हस्तक्षेप भी होने लगा,जिससे उसकी प्रकृति और मूल स्वरूप भी अंतर देखने को मिला है। किंतु फिर भी राजस्थान,उत्तर प्रदेश,बिहार, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में आज भी त्योहारों, घरेलू उत्सवों, विवाह जन्मोत्सव आदि समारोह में लोकगीतों का गायन पारंपरिक रीती रिवाजों के अनुसार होता है।

सकारात्मक संभावनाएँ :

1.पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी का परस्पर सांस्कृतिक जुड़ाव-

इस प्रकार उत्सव क्या घरेलू आयोजन समारोह आदि होती है तो परिवार के सभी सदस्यों का बस एकत्रित होना होता है और इन उत्सवों में लोकगीतों के माध्यम से सांस्कृतिक बोध पिछली पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक स्थानान्तरित होता है जिससे नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति के प्रति उत्सुकता और जुड़ाव का आभास होता है तथा उसमें रुचि भी बढ़ती है।

2. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक संबद्धता- साझा सांस्कृतिक पहचान होने से छात्रों के सामुदायिक एकता का विकास होता है।कढ़ छात्रों में भावनात्मक अभिव्यक्ति की वृद्धि होती है जिसे लोग भी तो मैं दुख खुशी सामाजिक संदेश प्रेम भावनात्मक तत्व होते हैं। ग्रामीण विद्यार्थी इन्हें दैनिक जीवन से जोड़ते हैं जबकि

शहरी विद्यार्थी इन माध्यम से ग्रामीण जीवन को समझ पाते जिससे भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा परस्पर समझ को बढ़ावा मिलता है।

3.सांस्कृतिक विविधता में एकता का संदेश- बस लोकगीतों के बाद हम से विभिन्न समुदायों के मध्य भावनात्मक और सांस्कृतिक संबद्धता बनती है जिससे विविधता में एकता का पौध मजबूत होता है स्कूलों में सांस्कृतिक आयोजनों और मंचों पर लोक गीतों को बढ़ावा देकर इस भावना को और प्रोत्साहित किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंजाबी ,असमिया, तमिल ,गुजराती, राजस्थानी लोकगीत एक साथ प्रस्तुत किए जाते हैं तो विभिन्न संस्कृतियों को मानवीय भावनाओं और मूल्यों को एक ही सांस्कृतिक भाग माना जाता है।

4.बस सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संवाहक –

लोक गीत मनोरंजन के साधन होने के साथ साथ सामाजिक सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का भी कार्य करते हैं जो एक पीढ़ी से अगली पीढी तक संप्रेषित होकर सांस्कृतिक मूल्यों का संवाहक बनती है ,विशेष रूप से ग्रामीण और समुदायों में एक पीढ़ी दर पीढ़ी,ज्ञान, परंपरा को हस्तांतरित करने से शिक्षा में संवेदनशीलता व समावेशीकरण होता हैं।

4.शिक्षा में लोकगीतों को शामिल करने की रणनीति

शिक्षा प्रणाली में लोकगीतों को प्रभावी ढंग से तथा विभिन्न पक्षों के आधार पर विशेष नीती इ इसका एक प्रारूप बनाने की आवश्यकता है जिसमें सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षिक तथा प्रशासनिक पहलुओं को शामिल किया जा सकता है जैसे कि

- नई तकनीक द्वारा लोक गीतों का विकास- वर्तमान समय में तकनीकी सुविधा के आधार पर मोबाइल ऐप यूट्यूब चैनल ई कंटेंट तथा ऑडियो विज़ुअल संग्रह डिजिटल पुस्तकालय बनाकर लोक गीतों का विकास करना संभव है।
- लोकगीत आधारित शोध अनुसंधान को बढ़ावा देना – विश्व विद्यालयों वह शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों शोध पत्रिकाओं और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों द्वारा लोकगीतों पर शोध , अनुसंधान पत्र आदि कार्य को नि: शुल्क अथवा न्यूनतम फीस पर करने का अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाए ।
- पाठ्यक्रम में लोक गीतों का सांस्कृतिक आयोजन- पाठ्यक्रम में पुस्तकों के साथ साथ विभिन्न हाँ पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे लोग भी प्रतियोगिताएं नृत्य सांस्कृतिक मेले नुक्कड़ नाटक क्षेत्रीय लोक कला उत्सव बालसभाओं में गीत आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाना।
- कक्षा स्तर के अनुसार पाठ्यक्रम में लोक गीतों का अनिवार्य पठन पाठन सम्मिलित करना – विषयवस्तु के अनुसार पाठ्यक्रम में भाषा सामाजिक व नैतिक अध्ययन के विषयों में लोकगीतों से संबंधित पाठ्यसामग्री को सम्मिलित किया जाए।
- सामाजिक योगदान को सम्मानित करना- विद्यालयों में विद्यार्थियों को लोकगीतों के ज्ञान हेतु समाज के विशिष्ट लोगों का ये फोटो तथा समुदाय विशेष के लोग कलाकारों इस सहभागिता करवाकर विद्यालयों में लोक शिक्षा सत्रों का आयोजन किया जा सकता है, जिससे छात्रों के नो गीतों ओर रुचिकर बनाया जा सकता है।

5.प्रतिकूलताऐं

लोकगीतों का प्रचार-प्रसार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सरल कार्य नहीं है इसमें कई चुनौतियां हैं जैसे कि

- सर्वप्रथम बड़ी बाधा ही ये है कि लोकगीत मौखिक रूप से एक पीढ़ी में भी मौखिक रूप सीमित है,जिन्हें अगली पीढ़ी तक आसानी से नहीं पहुंचाया जा सकता क्योंकि ये लिखित रुप से पूर्णतया उपलब्ध नहीं है।

- लोक गीत अक्सर लोकभाषा व स्थानीय भाषा में गाए जाते हैं और वर्तमान समय में लोक भाषाओं के प्रति अरुचि और अशिक्षा से लोकगीतों को भी समझना संभव नहीं ।
- सांस्कृतिक विभेदिताओं के कारण वर्तमान पीढ़ी लोकगीतों से कहीं अधिक पाश्चात्य गीतों के प्रति ज्यादा उत्साहित है।
- लिखित दस्तावेज़ों का अभाव से कई लोग गीत पिछली पीढ़ी के कई सारे जानकारों के साथ ही विलुप्त हो गए क्योंकि वो मौखिक रूप से ही प्रचलित रहे।
- उचित रखरखाव, संरक्षण हेतु योजनाएं क्रियान्वित न हो पाना तथा संग्रहण सबसे बड़ी चुनौती है।
- आधुनिकरण तथा स्थान परिवर्तन से शहर की ओर आकर्षित होकर और पाश्चात्य संस्कृति का अनुकूलन तथा ग्रामीण मूल सांस्कृतिक विरासत का पीछे छूटना जिससे पाश्चात्यीकरण को अपनाया किंतु सांस्कृतिक मूल विरासत को भूलना।
- जन सामान्य से लोकगीतों का रबर यू ना हो पाना क्योंकि यदि कुछ लोकगीत लिखित रूप में उपलब्ध भी है तो वह विशेष पुस्तकालय में है जहां पर आम जन का सामान्य रूप से पढ़ने के लिए अनुपलब्ध होना है।

6.सुझाव व समाधान-

- लोकगीतों को लिपिबद्ध और रिकॉर्ड कर डिजिटल माध्यम में रखना अथवा लिखित रूप से और जन सामान्य भाषा में अनुवादित करके संरक्षित किया जा सकता है जिससे सभी वर्ग लोकगीतों को आत्मसात कर सके।
- डिजिटल माध्यम ऑडियो और वीडियो में क्षेत्रीय कलाकारों अथवा जानकारी द्वारा रिकॉर्ड कर संरक्षित किया जा सकता है।
- सरकार अथवा वैधानिक समितियों द्वारा क्षेत्रानुसार शोधपरक अभिलेख बनवाना कर संरक्षित किया जा सकता है।
- विद्यालयों विश्वविद्यालय में लोक गीतों से संबंधित पाठ्यक्रम अथवा पाठ सामग्री को संलग्न करना होगा।
- शख्स शैक्षिक संस्थानों मैं लोकगीतों को मूल आधार बनाकर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं जैसे निबंध लेखन गीत लेखन गायन प्रतियोगिताएं वाद्ययंत्रों की प्रतियोगिताएं आदि संपन्न करवाने से रुचि बढ़ाई जा सकती है ।
- आधुनिक डिजिटल माध्यमों जैसे पॉडकास्ट,लोक गीत आधारित ऐप्लिकेशंस, यूट्यूब चैनल,टीवी चैनलों, ऑनलाइन कार्यक्रम, ई पुस्तकों, वेब साइटों, ऑडियो बुक्स जिनमें लोकगीतों के क्षेत्रीय भाषाओं की उपलब्धता तथा विशिष्ट कलाकारों द्वारा गेय पारंपरिक गीतों को संरक्षित किया जा सकता है।
- क्षेत्र अनुसार स्थानीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर मेले कार्यशालाएं लोक गीत प्रतियोगिताएं पखवाड़ा विशिष्ट सांस्कृतिक दिवस मनाना और वेशभूषा प्रतियोगिता अथवा वाद्ययंत्रों के साथ प्रस्तुतियां लोकगीतों को रुचिकर बना सकती है।
- लोक गीतों के विशिष्ट जानकारी स्थानीय गायक कलाकार नाटक के कलाकार आँधी के कार्यक्रम करवा कर उन्हें सम्मानित घर प्रोत्साहित कर उन्हीं द्वारा ग्रामीण अथवा लोक जन मानस के मध्य प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया जा सकता है।
- विभिन्न प्रचार प्रसार माध्यमों द्वारा लोकगीतों इस पर आधारित कार्यक्रम डॉक्यूमेंटरी व चलचित्र फिल्मों के माध्यम से एक सार जनसमूह तक लोकगीतों का सामूहिक प्रचार संभव है।
- वैधानिक समितियों तथा सरकार द्वारा लोक गीत संरक्षण खूब विशिष्ट स्थान देना सांस्कृतिक मंत्रालयों द्वारा लोकगीतों के संरक्षण के लिए विशिष्ट योजनाएं चलाना तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्रीय लोक संगीत को

सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विशेष स्थान और मान्यता प्रधान कर प्रोत्साहित करने से भी लोक गीतों को संरक्षण मिल सकता है।

निष्कर्ष :

हृदय को छू लेने की सह शक्ति ही लोक गीत का प्राण है उत्सव पर्व ऋतुओं और अवसर के लोक गीतों के विविध रूप देखे जा सकते हैं लोकगीतों का हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में अपना एक विशिष्ट स्थान है लोकगीतों में किसी राष्ट्र का इतिहास संस्कृति एवं नैतिक आदर्श निहित होते हैं और किसी भी संस्कृति की आत्मा लोक संस्कृति में निवास करती है।अतः वर्तमान समय के अनुसार विद्यार्थियों को न केवल आधुनिक ज्ञान की आवश्यकता है बल्कि उन्हें अपने सांस्कृतिक व मूल ज्ञान को भी साथ में समझना होगा और लोक गीत इन दोनों की मध्यस्थता करता है जो पुराने से नए को जोड़ कर संतुलन बनाए रखने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. अग्रवाल जय कृष्ण, हाड़ौती लोक गीत
2. IGNU पाठ्यक्रम- लोक संस्कृति और शिक्षा
3. शर्मा डॉ प्रेमचंद्र,हाड़ौती : संस्कृति और परंपराएं
4. सिंह, सुधीर. भारतीय लोक साहित्य:स्वरुप और मूल्य
5. पाडिया डॉ चंद्रकला,राजस्थान के लोकगीत और संस्कृति
6. बंसल डॉ सतीश,राजस्थान की लोकधुनें
7. शर्मा ,रमेश .राजस्थानी लोक संगीत का समाजशास्त्र
8. त्रिवेदी कमलकांत, राजस्थान की लोक परंपराएं
9. शास्त्री डॉ सीताराम,लोकसंगीत : राजस्थान की विरासत
10. नेहरु, जवाहर लाल , भारत एक खोज

•